2

असाज़्प्रदायिक मसीहियत: ज़्या यह सज़्भव है?

बहुत से आधुनिक प्रचारक लोगों को मसीही बनने और ''अपनी पसन्द की कलीसिया में शामिल होने'' की शिक्षा देते हैं। वे ऐसी शिक्षा इसलिए दे रहे हैं ज़्योंकि वे यह मानते हैं कि लोग किसी साज़्प्रदायिक संगठन से जुड़े बिना भी मसीही होते हैं अर्थात किसी डिनोमिनेशन या साज़्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य बने बिना भी मसीही व केवल मसीही बनना सज़्भव है। इसलिए आज की प्रसिद्ध शिक्षा के अनुसार, उन्हें यह तर्क देने या सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है कि परमेश्वर की आराधना करने की इच्छा करने वाले के लिए सबसे पहले मसीही बनना आवश्यक है।

इस प्रसिद्ध शिक्षा के अनुसार मुझे भी यह प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है कि, लोग किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया में शामिल होने से पहले न केवल मसीही बनते हैं, बल्कि उन्हें प्रभु यीशु के लहू के द्वारा उद्धार भी मिलता है, खरीदा जाता है, छुड़ाया जाता है और परमेश्वर के मेमने के बहुमूल्य लहू का दाम देकर मोल लिया जाता है। ये सब मान्य तथ्य हैं। इस देश की कोई भी साज़्प्रदायिक कलीसिया किसी ऐसे व्यज़्ति को अपनी सदस्यता नहीं देगी जब तक यह साबित न हो कि वह व्यज़्ति मसीही है अर्थात उसका उद्धार हो चुका है। बहुत से धार्मिक संगठन इसके महत्व पर ज़ोर देते हुए बड़ी सावधानी से बात करते हैं। इस पुस्तक को छोड़कर कि ये शिक्षक लोगों को मसीही बनने का ढंग सिखाते हैं या नहीं, यह बात सभी मानते हैं कि किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया में शामिल होने से पहले उद्धार पाना, परमेश्वर की संतान बनना या मसीही बनना आवश्यक है। इस तथ्य का इस चर्चा में विशेष महत्व है; इससे हम कम से कम आरज़्भ तो कर ही सकते हैं।

यह मानने का अर्थ कि साज़्प्रदायिक कलीसिया का धज़्बा लगाए बिना मसीह के बारे में सुना जा सकता है, मसीह के, बल्कि उसके लहू के पास आया जा सकता है, उद्धार पाया जा सकता है मेमने की जीवन की पुस्तक में अपना नाम लिखवाया जा सकता है, बहुत कुछ मानना है। परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा करने वाले के लिए इस पर आश्चर्य करना भी उचित है कि इतनी सारी साज़्प्रदायिक कलीसियाएं ज़्यों हैं। फिर इस प्रश्न पर चर्चा होनी आवश्यक है कि उद्धार पाए हुए इस व्यज़्ति को, परमेश्वर के इस बालक अर्थात मसीही को किसी कलीसिया से सज़्बन्ध रखने के लिए किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया में शामिल होना, और कलीसिया में लगातार जाना आवश्यक है।

इसमें कोई संदेह नहीं होगा, कि पिन्तेकुस्त के दिन चेलों में मिलाए जाने वाले लोगों का उद्धार हुआ था अर्थात वे मसीही थे; ज़्योंकि यह कहा गया है, ''... और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था'' (प्रेरितों 2:47ख)। न ही कोई इस बात से इन्कार करेगा कि ये चेले ''इकट्ठे'' थे और ''एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, ... और परमेश्वर की स्तुति करते थे'' (प्रेरितों 2:46, 47क)। इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि ये लोग जो ''परमेश्वर की स्तुति'' करने के लिए मन्दिर में ''इकट्ठे होते'' थे, मिलकर कलीसिया बनते थे, ''कलीसिया'' के रूप में काम करते थे, और ये सभी चेले उस कलीसिया से जुड़े हुए थे। आश्वस्त होने के लिए, हम इन लोगों के इतिहास में देखकर जान सकते हैं कि उनके दो प्रचारकों, पतरस और यूहन्ना को, उसके नाम का प्रचार करने के कारण कैसे जेल में डाला गया था; परन्तु विचार विमर्श करने के बाद इन प्रचारकों को ''अपने साथियों के पास'' (प्रेरितों 4:23) जाने की अनुमति मिल गई थी, जिनके पास जाकर उन्होंने जेल के अपने अनुभव बताए थे। फिर इस समूह ने ''यह सुनकर, एक चिज़ होकर ऊंचे शज़्द से परमेश्वर से कहा'' (प्रेरितों 4:24) और प्रार्थना की; ''जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, ... और वे सब ... परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे'' (प्रेरितों 4:31)। इसलिए, ये लोग अर्थात उद्धार पाए हुए परमेश्वर की आराधना, उसकी स्तुति और उससे प्रार्थना करने के लिए कलीसिया के अधिकार से इकट्ठे होते थे। ज़्या ऐसी सभाओं को ''कलीसिया की सभाएं'' कहना गलत होगा? ज़्या यह कहना गलत है कि उद्धार पाए हुए ये लोग इस तरह इकट्ठे होकर और ''इकट्ठे'' आराधना करके ''कलीसिया'' बन सकते हैं और वे वास्तव में ''कलीसिया के रूप'' में आराधना कर रहे होते थे? कहीं ऐसा न हो कि हम बहुत तेजी से आगे निकलकर बहुत कुछ निष्कर्ष निकाल लें, इसलिए हम फिर से पवित्र शास्त्र में लिखे हुए पर ध्यान देने का आग्रह करते हैं। यदि पवित्र आत्मा ने इन लोगों को ''कलीसिया'' कहा, तो हम इससे संतुष्ट हो जाएंगे।

> उन दिनों में जब चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलने वाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें। इसलिए हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। ... (प्रेरितों 6:1-5)।

उन्होंने सात पुरुषों को चुन लिया और प्रेरितों ने उन्हें ''इस काम पर'' ठहरा दिया। इस तरह हम इन लोगों को फिर से यरूशलेम में इकट्ठा होते देखते हैं। इस एकत्रित सभा में, वे किसी काम को करने के लिए कुछ लोगों को चुनकर उन्हें ठहराने का काम कर रहे थे। (मैं इस काम को ''कलीसिया का काम'' कह सकता हूं?) ''और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के अधीन हो गया'' (प्रेरितों 6:7)।

यरूशलेम में चेलों की संज़्या लगातार बढ़ रही थी। प्रार्थना करने, स्तुति करने, प्रचार करने, पापियों के उद्धार के काम और धार्मिक सेवाओं में लगा हुआ यह समूह ज़्या कहलाता था? ज़्या हम इसे कलीसिया कह सकते हैं? ज़्या हम यह कहें कि हमने वास्तव में प्रभु के चेलों को अर्थात उद्धार पाए हुओं को ''कलीसिया के रूप में'' प्रभु के चेलों की तरह ही काम करते और आराधना करते देखा है और प्रतिदिन उद्धार पाने वाले दूसरे लोग इन में मिलाए जा रहे थे? यह समझ आने पर कि हम इन्हें हर प्रकार से एक कलीसिया कह सकते हैं, हमें इससे भी ज्यादा सुरक्षित लगेगा जब हम पाते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें ऐसा कहता है: ''उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा'' (प्रेरितों 8:1क)।

सचमुच, यही लोग, जिन्हें हमने प्रार्थना और स्तुति के लिए इकट्ठे होते, सुसमाचार का प्रचार करने और निर्धनों की देखभाल करने के लिए लोगों को ठहराने के लिए इकट्ठे होते देखा था, स्वयं पवित्र आत्मा ने उन्हें ''यरूशलेम की कलीसिया'' कहा (प्रेरितों 8:1; 11:22)। निश्चय ही, इतना ही काफ़ी है। यरूशलेम में उद्धार पाया हुआ प्रत्येक व्यक्ति, वहां की कलीसिया का एक सदस्य था, फिर भी यह यरूशलेम की साज़्प्रदायिक कलीसिया होने का दावा नहीं कर सकती थी। वास्तव में प्रत्येक साज़्प्रदायिक कलीसिया यह मानेगी कि यरूशलेम की यह कलीसिया, जिसमें नगर का उद्धार पाया हुआ हर व्यज़्ति सदस्य था परमेश्वर की कलीसिया ही थी। इसलिए, ये चेले अर्थात मसीही अर्थात उद्धार पाए हुए लोग जो जीवन भर केवल मसीह के चेलों अर्थात मसीहियों के रूप में रहे, कभी भी उन्होंने किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के बारे में नहीं सुना था।

सचमुच, हमें असाज़्प्रदायिक विशुद्ध और साधारण मसीहियत मिल गई है, जिसे संसार विशुद्ध मसीहियत के रूप में मानेगा। इसके साथ ही, हमें परमेश्वर के लोगों के एक मन और एक प्राण होना मिला है; उनमें कोई फूट नहीं थी, बल्कि वे एक ही मन और एक ही मत होकर रहते थे (1 कुरिन्थियों 1:10)। यही तो हमारे उद्धारकर्ज़ा की पवित्र प्रार्थना थी, कि सभी विश्वासी एक हों (यूहन्ना 17:20, 21)। यहां सचमुच इस प्रार्थना का उज़र मिल गया था। साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के बनने से फूट कैसे रुक सकती है और हमारे प्रभु की प्रार्थना का उज़र कैसे मिल सकता है?